प्रश्न–01. देवदर्शन की विधि लिखिए ?

उत्तर– घर से नहा धोकर शुद्ध वस्त्र पहिनकर मन्दिर जाना चाहिए, मन्दिर के द्वार पर शुद्ध छने जल की टंकी रखी होती है उससे जल लेकर हाथ पैर धोकर मन्दिर की सीढीयां चढते हुए भगवान की जय जय कार लगाते हुए निःसहि, निःसहि, निःसहि तीन बार बोलना चाहिए। उसके बाद वेदी के सामने जाकर ऊँ जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु बोलकर णमोकार मंत्र फिर चत्तांरि मंगल पाठ फिर स्तुति पढकर तीन आवर्त देकर ढोक देना चाहिए। अर्थात साष्टांग नमस्कार करना चाहिए फिर मन को एकाग्र चित्त करके स्तुति पढते हुए तीन प्रदक्षिणा देना चाहिए फिर कार्योत्सर्ग करना चाहिए फिर साष्टांग नमस्कार करना चाहिए उसके वाद अगर मन्दिर जी मे शास्त्र स्वाध्याय चल रहा हो तो उसमे बैठे तथा नही चल रहा हो तो स्वयं शास्त्र स्वाध्याय करें व उसका घर जाकर मनन, चिन्तन करे कि मैं कौन हूँ, मैं जानता देखता हूँ आदि।

प्रश्न–02. अष्टमूल गुण कौन कौन से है, उन्हे क्यों नही खाना चाहिए?

उत्तर– तीन मकार, मद्य, मांस, मधु, पंचउदम्बर फल, बड, पीपर, ऊमर, कटूमर, पाकर का फल।

मंद्य – यह नशाकारक अभक्ष्य है यह शराब सडा, गलाकर बनाई जाती है इसमें अत्यधिक मात्रा में जीव हिंसा होती है इसलिए इसे नही पीना चाहिए।

माँस – इसमें निरन्तर जीव उत्पत्ति होती रहती है तथा जीव हिंसा होती है अतः इसका सेवन नही करना चाहिए।

मधु – इसमें मधुमक्खियों की लार होती है वो इसी में रहती है जिससे अनुपसेव्य अभक्ष्य हो जाता है अतः इसका सेवन नही करना चाहिए। त्रस राशि का पिण्ड हैं।

पंच उदम्बर फल – इसमें निरन्तर चलते – फिरते त्रस जीव देखे पायें जाते है इसलिए इसका सेवन करना ही नही चाहिए।

प्रश्न–01. क्या आत्मा रागादि रूप हैं?

उत्तर– नही, जिस प्रकार एक द्रव्य दूसरे द्रव्य को छूता नही है वैसे ही ज्ञायक प्रभु रागादि को छूता नही रागादि रूप होता नही।

प्रश्न–02. धर्म की शुरूवात कैसे होती हैं?

उत्तर– स्वच्छत्व आदि अनन्त शक्ति के धारी प्रभु मैं हूँ ऐसी प्रतीत होने पर धर्म की शुरूवात होती हैं।

प्रश्न–03. क्रमबद्ध का निर्णय क्यों आवश्यक हैं?

उत्तर– क्रमबद्ध का निर्णय आवश्यक है क्योकि क्रमबद्ध के निर्णय मे अंश बुद्धि अर्थात पर्याय दृष्टि छूट जाती है।

प्रश्न–04. आत्मा का रागादि के साथ क्या सम्बन्ध हैं?

उत्तर– आत्मा का रागादि को करने का स्वभाव तो है ही नही रागादि का त्याग भी नाम मात्र का कथन हैं।

प्रश्न–05. मिथ्या दृष्टि किसे कहते हैं?

उत्तर– वस्तु मे कोई दोष नही, दृव्य गुण त्रिकाल स्वभावी आत्मा का जो अनादर करे वह मिथ्या दृष्टि है।

प्रश्न–06. स्वछत्व शक्ति का स्वरूप क्या हैं?

उत्तर– अनन्त गुणों मे एक स्वछत्व शक्ति व्याप्तती है एक गुण मे न व्यापें ऐसा उसका स्वभाव नही। अमूर्तिक आत्म प्रदेशों में प्रकाशमान स्वछत्व शक्ति होती है लोकालोक प्रदेशो मे नही प्रकाशती।

प्रश्न–07. आत्मा विकार रहित कब होता हैं?

उत्तर– आत्मा मे अनन्त गुण है कोई गुण विकार करे ऐसा नही है, पर मैं दया दान करना यह पर्याय स्वभाव है यह व्यवहार की योग्यता है, पर मैं दया दान जीव करे ऐसा गुण आत्मा में नही। राग त्याग, दया, दान का परिणाम पर भाव का

त्याग करे ये तो नाम मात्र है। शरीर, स्त्री, दुकान का न त्याग करे न ग्रहण करे ऐसा भाव अन्दर से आए तो विकार मिटे।